बिखरे बादल

बहुरंगी काव्य संग्रह

महेन्द्र जोशी

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Mahendra Joshi 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7825-935-7

Cover design: Aafiya Saifi
Typesetting: Namrata Saini

First Edition: June 2026

प्राक्कथन

मेरे चार काव्य संग्रहों की भूमिकाऐं

1. इन्द्रधनुषी हिलोरें

“नैसर्गिक सौन्दर्य के गहन तादात्म्य, जीवन में किसी प्रिय स्वप्न की कल्पना और उन राहों में गहन निराशा, असफलता का भावातिरेक जब मानव मन से उच्छवसित हो बहता है, वही गीत बन जाता है। प्रकृति प्रिय प्रभु के पावन रागात्मक सम्बन्धों के सरस समागम से निर्मित सेतु से इन्हें निहारा जा सकता है। यही वैयक्तिक अनुभव जब सार्वजनीन होने को मचल उठते हैं और भीड़ में प्रत्येक के अपने हो जाते हैं, वहीं अपना प्रयोजन पा जाते हैं।”

2. सागरिका

“एक पर्वतीय सुरम्य घाटी। घाटी के बीच मंद गति से किल्लोल करती बहती रामगंगा नदी। घाटी को चारों ओर से घेरे पर्वत, चीड़ और बांज के वनों से आच्छादित। बचपन का मेरा यही परिवेश रहा, देवभूमि की इस पावन धरती पर देवदार और चीड़ के घने जंगलों में गूंजती कविताओं का स्वर आपको पग पग पर सुनाई दे सकता है, पंत की इस सुकुमार प्रकृति के स्वर्णिम दामन में संवेदनाऐं गीत बन कर मचल उठती है। यहां पर अलौकिक-लौकिक एवं प्रकृति प्रेम का त्रिकोण आपको प्रेम से लबालब भर देगा। पर्वतीय कठिन दिनचर्या अपनी सांस्कृतिक धरोहर से ऊर्जा लेती हुई स्वयं को जीवन्त बनाए रखती है। उल्लास एवं प्रेम की यही मौलिक भावना मेरी रचनाओं में परिलक्षित हो सकती है।”

3. ये गीत तुम्हारे

“ईश्वर अर्थात् प्रेम अर्थात आनन्द ही जीवन की पराकाष्ठा है। मनुष्य से प्रेम, प्रकृति से प्रेम, सभी प्राणियों से प्रेम- केवल प्रेम की धारा निःसृत होकर सबको आप्लावित करते हुए गीतों के निर्झर बन जाऐं। प्रेम की अविरल धारा को छूकर बहते हुए शब्द ही पावन

गीत को जन्म देते हैं। हवा के झोंके से सरसराती हुई वृक्ष की कतारों ने जंगल में किसी गीत को ही बिखराया होगा। कठिन परिश्रम के बीच भी तनाव रहित उल्लसित पर्वतीय बालाओं के मुखड़ों ने गीतों में प्रेम का बीज बोया होगा।"

4. बिखरे बादल

प्रकृति, प्रिय और प्रभु के साथ रागात्मक सम्बन्धों की संवेदनाओं का प्रवाह ही कविता का जनक है, यही सार पिछली तीन भूमिकाओं में दिखाई पड़ता है। रूमानी कल्पनाओं के पंख लगाकर उड़ते गीतों की गति को आकाश में बिखरे बादलों ने कुछ धीमा करने का प्रयास किया है, कवि कहता है-

"उड़ो तो उड़ो पर इतना
अपनी सीमाएं ना भूलो
बुलंद हौसले रखो पर
अपनों को भी मत भूलो।

आकाश में उड़ सकते हो लेकिन
विश्राम तुम्हें धरती देगी
सपनों की उड़ान अच्छी है
यदि पैर रहें धरती पर ही।"

इस बार धरती और धरती के शहरों, उत्सवों मानवीय संबंधो और देश के मानस पुत्रों आदि पर इस काव्य संग्रह में ध्यान केन्द्रित किया गया है। कोरोना काल के भयावह मंजरों पर भी लेखनी चली है, वस्तुतः प्रश्नगत संग्रह का सृजन कोरोना काल की एकांतवास युक्त भयावह त्रासदी को दिया जाना अनुचित नहीं होगा।

बच्चों के लिए स्पाइडरमैन, सुपरमैन जैसे सुपर हीरोज का बखान है, सैलानियों के लिए पर्यटक स्थलों, नगरों का दिग्दर्शन भी कराया गया है। अमृत महोत्सव और अग्निवीर के साथ ही चुनिन्दा त्यौहारों और महामानवों का महिमा वर्णन भी हुआ है। अपनी लाइफ लाइन भारतीय रेल को भी स्थान मिला है तो अन्य विविध विषयों को भी रेखांकित किया गया है।

रचनाधर्मिता को थोड़ा सा मोड़ देते हुए इस संग्रह में विभिन्न रंगों के बादलों को बरसाने का प्रयास किया गया है।

रचनाओं में उद्धृत आंकड़े और अन्य तथ्य तत्समय गूगल से या अन्य स्रोतों से साभार लिए गए हैं, वर्तमान में इन आंकड़ों में परिवर्तन होना स्वाभाविक है।

रचनाओं की यह पुष्पांजलि यदि मेरे शुभचिंतको को थोड़ा बहुत भी पसंद आती है तो इस प्रयास को मैं सार्थक मान लूंगा।

आप सभी को विनम्र भावों के साथ सादर समर्पित है- बिखरे बादल।

महेन्द्र जोशी

अनुक्रमणिका

राम....... 1
आसमान के परिन्दे 3
अपनी अरावली बचाओ 4
मानवता....... 6
रथवाहिनी रामगंगा 8
स्पाइडरमैन 10
नव संवत् 11
चाय की चाह....... 13
हमारे पिता 15
योग....... 16
दावानल 18
चलते रहे 20
अग्निवीर 21
आंतरिक मौन 22
अमृत महोत्सव....... 24
विश्व गणित....... 27
शिक्षक जी 28
मां का प्यार 30
कनागत 31
बाल श्रमिक....... 32
पापा 33
गुरु 34
दोस्त 35

होली 37
हिन्दी 39
गणतंत्र 40
कोरोना (1) 41
कोरोना (2) 42
कोरोना (3) 43
कोरोना (4) 45
कोरोना (5) 46
कोरोना (6) पेरौडी... 47
कोरोना (7) 48
कोरोना (8) 49
कोरोना (9) 50
कोरोना (10) 51
कोरोना (11) 52
गृहिणी... 54
सुपरमैन 56
चलेंगे नैनीताल... 58
शब्द... 60
किसान और शैतान... 62
नवरात्रि... 64
नाम बड़े दर्शन छोटे 66
रेल भाई रेल... 69
चुनाव चौकड़ी... 73
अनुपम... 74
समभाव... 76
पित्र दर्शन... 77

दीपमालिका 78
दीप जलाऐं.. 80
इंदौर 81
गुरुग्राम.. 83
जयपुर 85
सरदार पटेल 87
छठ पूजा.. 89
किताब जिंदगी 90
सरगम सारे 92
यू के स्थापना दिवस.. 94
बाल दिवस 96
अटल 97
नोएडा, यात्रा जारी है.. 99
यातायात नियम 102
नया वर्ष.. 104
ज्योतिर्मठ क्रंदन.. 107
फिर खिलेंगे.. 109
जी चाहे.. 110
बाल कविता (कुक्की).. 111
बजे डमरू 113
दाढ़ी दर्शन 115
उत्थान 117
महावतार 118
गाऐं फाग 120
जीवन-राही.. 122
चाँद पर 124

करें प्रार्थना 125
अनमोल जीवन 126
चैम्पियन ट्रॉफी जीतने पर (2025).. 127
माखनलाल चतुर्वेदी (हमारे माखन) 129
रक्षा सूत्र.. 131
ऑपरेशन सिंदूर 132
नगाधिराज हिमालयः 133
फायकू प्यार के.. 135
विविध 137

राम

दशरथ के घर जाए राम
गए विश्वामित्र संग राम
ताड़का वध करने के बाद
सीता को वर लाए राम

राजतिलक को त्याग राम
पिता वचन निभाए राम
चौदह वर्ष वन गमन कर
मर्यादा ही निभाए राम

दुष्टों के संहारक राम
बाली, स्वर्ग पहुँचाए राम
खरदूषण विध्वंसक राम
सीता के रखवाले राम

अंगद से भी बात बनी ना
लंका पर धाए तब राम
सुग्रीव, हनुमान का साथ मिला
लंका जीत गए तब राम

कुंभकर्ण, रावण वध कारक
राक्षस कुल के तारक राम
विभीषण को कर राजतिलक
अयोध्या को लौटे तब राम

स्वागत कर लो स्वागत कर लो

सीता संग पधारे राम
आज मनाएं राम दीवाली
बोलो राम, जय श्रीराम

आसमान के परिन्दे

आसमान में उड़ता परिन्दा
स्वच्छन्द और उन्मुक्त होता है
उड़ता ही जाता है वह
उड़ता ही जाता है

सपनों की उड़ान से आगे
जाने की लालसा लिए
यत्र तत्र, सर्वत्र घूमता
सबसे ऊंचा जाने के लिए

आकाश अनंत के आगे
कब किसकी चल पाई है
थक हारकर पंख समेटे
धरती ही फिर भाई है

उड़ो तो उड़ो पर इतना
अपनी सीमाऐं ना भूलो
बुलंद, हौसले रखो पर
अपनों को भी मत भूलो

आकाश में उड़ सकते हो लेकिन
विश्राम तुम्हें धरती देगी
सपनों की उड़ान अच्छी है
यदि पैर रहें धरती पर ही

अपनी अरावली बचाओ

मैं हूँ पहाड़, तो हूँ पहाड़
मेरी भी क्या परिभाषा
मैं हूँ एक पर्वतमाला
भारतीय जीवन की आशा,

युगों युगों से करता आया
पर्यावरण संरक्षण का उद्घोष
जल, जंगल, जमीन का ही
बांटता आया हूँ परितोष

अरावली यह नाम है मेरा
गुजरात से दिल्ली तक फैला
पालनपुर से रायसीना तक
मैंने है डेरा डाला

जलवायु और जल संरक्षण
करता रहता हूँ दिन रात
न फैले रेगिस्तान आप तक
सहता हूँ हर झंझावात

अनेक नदियां, सघन बनों
और झीलों का पावन संसार
खनिज और प्राकृतिक संसाधन
से पाया है यह आकार

अब विकास के बुलडोजर से
क्यों करते मेरा सत्यानाश
अवैध खनन और सुरंग बनाकर
मेरे जीवन का होता ह्रास

करता हूं अनुरोध आपसे
और नहीं दें घाव सकल
विकल अंग हो जाऊंगा मैं
नहीं दे पाऊंगा प्रतिफल,

देश के भावी जीवन को
सन्मति से अभी सजाओ
बोलो मिलकर आज सभी
अपनी 'अरावली' बचाओ।

मानवता

मानव तूने क्या कर डाला
मानवता को छोड़कर
स्वार्थ कहां से भर लाया तू
रिश्ते नाते तोड़ कर

संवेदन को ताक पे रख कर
तू निष्ठुर बन बैठा
अपनी डफली आप बजाता
बगुला बन जा बैठा

जिए कोई मरे कोई भी
तुझको फर्क न पड़ता
तू तो अपने में ही खोया
परहित से है डरता

सबको ही जो बिना विचारे
कान्धा अपना देता
देख उसी का शव आज है
दो कन्धों को तरसता

शर्म करो तुम मनुज नहीं हो
हो अपने ही कठपुतले
जीव जन्तु और धरा वृक्ष से
कुछ अच्छी रचना ही गढ़ ले

'परहित सरिस धर्म नहिं भाई'
इस विचार को भूल गया
अपने लिए तो सब जीते हैं
गैरों को क्यों तू भूल गया

हड्डियां समर्पित कर दी थी
वह दधीचि अपने पूर्वज थे
जन कल्याण वचन की खातिर
कर्ण ने नौंच दिए कवच थे

देवभूमि के पुत्रो जागो
त्याग समर्पण याद करो
जिसको जहां मदद करनी हो
खुद बढ़कर फरियाद करो

माना कि यह प्रलय काल है
कुछ कोशिश तो करनी होगी
अपनी जान हथेली पे रख
अमृत की बाट जोहनी होगी

रथवाहिनी रामगंगा

नदियों के उत्सव में देखो
रामगंगा की अब बारी है
स्कंदपुराण के मानसखंड में
यही ‘रथवाहिनी’ प्यारी है

उत्तराखंड के भूगर्भ से
जन्मी श्वेत धवल सी न्यारी
उतर कर चुपके से घाटी में
चौखुटिया पर सुंदरता वारी

इठलाती बलखाती देखो
प्राकृतिक सौन्दर्य की रानी है
कॉर्बेट नेशनल पार्क की शोभा
चंचल चंचल यह पानी है

प्रकृति का उपहार अलौकिक
प्यासी धरती का जीवन है
परिवहन का माध्यम भी ये
पर्यावरण का संवर्धन है

कालागढ़ का बांध है इसमें
सिंचाई, जलविद्युत का संगम
पौराणिक संदर्भ भी इसका
अर्थव्यवस्था का ये जंगम,

धार्मिकता का बीज यहां पर
कृषि विकास की जननी है
जल थल नभचर भी संरक्षित
नदी संस्कृति की यह भगिनी है।

उत्तराखंड, यू.पी. के अनेक जनपद
लाभान्वित होते हैं हरदम
कन्नौज निकट तब गंगा जी को
सौंप देती है अपना सरगम

जन जीवन की जीवन रेखा
रामगंगा है अति पावन
प्रदूषित नहीं करें इसे अब
यह संकल्प करें आज हम।

स्पाइडरमैन

अनाथ बच्चा बन जाता है
मकड़ी दंश से स्पाइडरमैन

मकड़ी की क्षमता वाला है
सहनशील है स्पाइडरमैन

फूंक मार के जख्म भरे वो
ऐसा डाक्टर, स्पाइडरमैन

चढ़ जाता है किसी शिखर पर
चिपकने वाला स्पाइडरमैन

रेडियोधर्मी ताकत से लैस
मजबूत कलाबाज स्पाइडरमैन

खतरों को पहले ही भांपे
वेब शूटर है स्पाइडरमैन

बच्चो तुम भी बनना चाहो
सुपरमैन और स्पाइडरमैन

मेहनत से ही बन सकते हो
मकड़ी मानव स्पाइडरमैन

नव संवत्

वासंती नवरात्रों के संग
नव संवत् की बेला आई

चैत्र मास के प्रथम दिवस को
ब्रह्मा जी ने सृष्टि रचाई
खिले हुए पुष्पों को ले के
नव संवत् की बेला आई

वृक्षों पर नव पत्र सुसज्जित
हरियाली का कौतुक भाई
नए अन्न का स्वागत करती
नव संवत की बेला आई

वैदिक हिन्दू और सनातन
धर्मों का नव वर्ष यही है
आर्य समाजी ध्वज को ले के
नव संवत की बेला आई

राम के द्वारा बाली का वध
इसी दिवस को हुआ बताई
राजा विक्रमादित्य प्रतिपादित
नव संवत् की बेला आई

दुर्गा के नौ रूपों का यह
शक्ति साधना का अवसर है
सतयुग का आरंभ बताती
नव संवत की बेला आई

नव उल्लास हो नया राग हो
नव निर्माण की आशा छाई
सुख शांति सद्भाव मनाने
नव संवत की बेला आई।

चाय की चाह

कड़क स्वाद और दे ताजगी
बनाओ फिर से ऐसी चाय
स्वास्थ्यवर्धक और मानसिक शांति दे
पिलाओ फिर फिर ऐसी चाय

अदरक इलायची लौंग डालकर
पाचक बन जाती है चाय
करे तनाव कम, ऊर्जा ज्यादा
ऐसी ही होती है चाय

काली सफेद हरी, हर्बल टी
ऊलोंग भी होती है चाय
आगन्तुक सत्कार करे जो
ऐसी प्यारी प्यारी चाय

आपसी मेल जोल बढ़ाती
सामाजिक सांस्कृतिक चाय
चीन ने खोजी पहले पहले
फिर दुनिया में फैली चाय

लोकप्रिय पेय मात्र नहीं ये
आयुर्वेदिक औषधि चाय
दुनिया भर में भेजी जाती
भारत की अलबेली चाय

असम, दार्जिलिंग, नीलगिरि
और कांगड़ा में उपजे चाय
कैमेलिया के पत्तों से ही
खिलखिलाती मुस्काती चाय

चाय वाली गली में जाकर
खोजता हूँ इठलाती चाय
मिलती नहीं अब दो की तीन
कड़की वाले दिनों की चाय,

अब यादों की खौले चाय
उसकी मेरी जूठी चाय
प्रेम गली में बिकने वाली
नाज़ुक सी आवारा चाय,

हमारे पिता

बाहर से कठोर मुख मुद्रा
अंदर से कोमल रिश्ता है
अपना सब कुछ देने वाला
वही पिता है, वही पिता है

माता की ममता के पीछे
छुपकर वही खड़ा रहता है
परिवार का दर्द संभाले
वही पिता है, वही पिता है

कभी कभी माता का भी वह
पात्र निभाता जाता है
रोता है, बाहर हंसता है
वही पिता है, वही पिता है

जीवन में मुझसे भी आगे
कैसे बढ़े, यही सोचता है
बच्चों पर दुनिया ही लुटा दे
वही पिता है, वही पिता है

धूप, ताप, बारिश में हरदम
परिवार का जो छाता है
साथ चले मित्रों से बढ़कर
वही पिता है, वही पिता है।

योग

चित्त वृत्तियों का निरोध
ही कहलाता है योग

अदृश्य सत्ता से संयोग
कराता है मात्र योग

आपको हृष्ट पुष्ट बनाए
आपका ही अपना यह योग

भारत की प्राचीन परंपरा
दर्शाता है अपना योग

अमूल्य उपहार दिया विश्व को
दुनिया में फैलाकर योग

भारत ने जब पहल करी तो
अन्तर्राष्ट्रीय बन बैठा योग

योग दिवस को आओ जानें
योगाभ्यास के लाभ और योग

करे जागरूक जन मानस को
दीर्घायु मंत्र का ज्ञाता योग

सबसे लम्बे, वर्ष दिवस को
घोषित हुआ है दिवस – योग

विश्वगुरु की राह में भारत
योग के करता अनेक प्रयोग

आओ कर लें हम भी योग
इक्कीस जून में है ये सुयोग

दावानल

किसने भड़काया दावानल
फिर से मेरे आंगन में
कौन चिढ़ा बैठा है भाई
जंगल के समरांगण में

शुद्ध हवा का वाहक हूं
मैं वायु प्रदूषण कम करता
मृदा उर्वरता का साक्षी
मानव में जीवन भरता

प्रकृति का मैं अद्भुत उपहार
नैसर्गिक सौन्दर्य का द्योतक
वन उत्पादों का संरक्षक
मैं ही पशु पक्षी का पोषक

पर्यावरण को तार तार कर
तूने मुझको भ्रम में डाला
असावधानी और धूम्रपान से
तूने मुझको धधका डाला

धधकती ज्वाला का तांडव
रौद्र रूप तब ले बैठा
बेजुबां जानवर सब दहके
आवास और तन मन छूटा

इस आर्थिक व जीवन क्षति को
नियंत्रित कैसे कर पाऐंगे
सावधानी और अग्निरेख से
जागरूकता ध्वज लहरायेंगे

वैश्विक ऊष्मा के इस युग में
जंगल जंगल बोने होंगे
जन जीवन हो मंगल मंगल
यही यत्न करने होंगे

चलते रहे

मेरे दाग जिन्दगी भर
साथ चलते रहे
कभी उभर गए
कभी मिटते रहे

प्यार की भी यही इक
कहानी रही
कभी नाराजगी
तो कभी रूहानी रही

सांस भी मेरे साथ
घिसटती रही
कभी उबासी रही
कभी चहकती रही

जिंदगी भी मेरे साथ
जीती रही
कभी रोती रही
कभी हंसती रही

अग्निवीर

विजयी अग्निवीर हमारा
अग्निपथ का राही प्यारा

मैं अग्निवीर हूँ अग्निवीर
अग्निपथों पर छाने वाला
अग्निवाण सा छूट गया तो
अग्निज्वाल बन जाने वाला

दहन कर दुश्मन की लंका
तब बजता मेरा डंका
भस्म सभी कुछ हो जाता है
विजय हमेशा, नहिं कोई शंका

विजयी अग्निवीर हमारा
अग्निपथ का राही प्यारा

आंतरिक मौन

बाहर की ध्वनियों से ऊबे
अब अंदर का मौन कहो
अंतर के आकाशों में अब
उड़ता है यह कौन कहो

वहां ओम के गर्जन तर्जन
वहां शांति की है हाला
ठंडा है आलोक वहां पर
वहां क्रांति की रूक ज्वाला

गहन गुफाओं के अंधेरे
परम प्रकाश की आभा घेरे
बाह्यांतर को शुद्ध करे जो
परमानंद के सघन सवेरे

उनसे अब तक मिलते मिलते
उनके नखरे सहते सहते
अब अपने से मिल लेता हूँ
जहाँ मिलें सब हंसते हंसते

हृदय स्थल के वातायन से
कहता कोई ढूंढ उसे अब
वहीं मिलेगा मेरा प्रियतम
खोज रहा हूं बहके बहके

कहते, नाम उसी का रट ले
कहते, कर उसका वंदन
अपने को जब पहचानेगा
मिट जायेंगे सब क्रंदन

अमृत महोत्सव

आजादी का है ये हर्ष
75 वर्षों का उत्कर्ष

अनगिन लोगों की कुर्बानी
कुछ जानी हैं, कुछ अनजानी
कुछ के चित्र बसे आंखों में
कुछ की केवल याद कहानी

आजादी का है ये हर्ष
देशभक्ति का उत्कर्ष

घर बार त्याग कर दौड़ चले
जीवन का सुख छोड़ चले
आजादी के हवन कुण्ड में
आहुतियां देने को मचले

आजादी का है ये हर्ष
बलिदानों का ही उत्कर्ष

कोल्हू के भी बैल बने
कोड़ों की बौछार तले
बर्फ की सिल्ली का बिस्तर
कालापानी की सैर चले

आजादी का है ये हर्ष
फांसी फंदे का उत्कर्ष

अहिंसा का भी अस्त्र चला
चरखे का भी मंत्र चला
तिरंगे ध्वज को फहराने
असहयोग का तंत्र चला

आजादी का है ये हर्ष
भारत छोड़ो का उत्कर्ष

सत्याग्रह को टाल सके ना
जलियां से भी डरा सके ना
घोड़ों से रौंदा कर देखा
युवा जोश को हिला सके ना

आजादी का है ये हर्ष
जवां दिलों का है उत्कर्ष

खून के बदले आजादी का
मंत्र चला फिर गांधी जी का
शान्ति और क्रांति का संगम
ले डूबा रथ अंग्रेजी का

आजादी का है ये हर्ष
सुभाष बाबू का उत्कर्ष

आजादी के दीवानों ने
स्वतंत्रता के परवानों ने
कितने जीवन होम किये
मेरे देश के वीर जवानों ने

आजादी का है ये हर्ष
समृद्ध भारत का उत्कर्ष

विश्व गुरु का अब संघर्ष
75 वर्षों का उत्कर्ष

विश्व गणित

बिन्दु से बिन्दु मिले
रेखा बन चले हम
रेखाओं से घिर गए
आयत हो गए हम

त्रिभुज चतुर्भुज से
बहुभुज तक आ गए
दुनिया की मारामारी में
पैथागोरस हो गए हम

शून्य से फिर चले
अनन्त की ओर बढ़े
समीकरण बिगड़ गए
पहाड़े हो गए हम

अंक से बीजगणित और
रेखागणित तक आ गए
शून्य का अर्थ न पाया
सांख्यिकी में उलझे हैं हम

शिक्षक जी

शिक्षक महिमा अपरंपार
शिक्षक जीवन का आधार

शिक्षा देता परिवार को
पहला शिक्षक कहलाता
शिक्षा बिना अधूरा जीवन
ज्ञान वहीं से पाता

व्यक्तित्व हमारा बन जाता
जीवन सार समझ में आता
जीवनयापन का दे ज्ञान
शिक्षक है भविष्य निर्माता

अंधकार को दूर भगाता
शिक्षक हमें कृतज्ञ बनाता
मोम सदृश वो पिघल पिघल
हम सबको उजियारा देता

सही मार्गदर्शन हम पाते
बुरा भला भी समझ ही जाते
सबके शुभचिंतक हैं शिक्षक
सम्मानित जीवन मर्म बताते

5 सितम्बर दिवस मनाने
शिक्षक प्रति सम्मान दिखाने
भारत रत्न थे राधाकृष्णन
उनका जन्मदिन लगे मनाने

मां का प्यार

कितने कष्ट सहे तुमने
जब मुझको जनम दिया
कितने अरमानों से पाला
और कितना जतन किया

मेरे साथ सदा मुस्काई
प्रतिपल छाया बन भरमाई
खुद खिलौना बन कर तुमने
प्रेम सुधा पल छिन बरसाई

सारी खुशियां मुझे दिलाने
अपनी खुशियां न्यौछावर की
जीवन में सब कुछ पा जाऊं
ऐसी तुमने हर कोशिश की

पिता की डांट बचाने को
तुम ढाल बनी हरदम मेरे
दुनिया की नजर बचाने को
काला टीका, आंचल तेरे

अपना सर्वस्व दांव पर तुमने
लगा दिया खातिर मेरे
अब फिर से नटखट मुन्ना बन
मैं आना चाहूं द्वारे तेरे

कनागत

सनातनता का गौरव पक्ष
आश्विन मास का कृष्ण पक्ष

श्रद्धाभाव से पितरों का तर्पण
ब्रह्म भोज और दान का अर्पण

पितरों को प्रसन्न करें हम
उनका ऋण भरपूर भरें हम
परलोकवासी पूर्वज वृन्द
खुश होंगे, होगा आनन्द

सामर्थ्यानुसार श्राद्ध करेंगे हम
हर दोष से मुक्त रहेंगे हम

पूरे वर्ष तृप्त रहें पूर्वज
सुख शांति की पैदा होगी उपज

बाल श्रमिक

मेरे हाथों के छालों को
देख रहे हो भाई
मेरे तन पर वस्त्र नहीं है
हाथों ने कलम नहीं पाई

हमको अनदेखा क्यों करते
हमरी भी सुध क्यों ना लेते
बाल श्रम पर रोक लगाओ
हमको क्यों पढ़ने ना देते

हमारे भी सपने हैं वैसे
आपके बच्चों के जैसे
हम भी बचपन जीना चाहें
खेल-खिलौने ऐसे वैसे

बाल श्रम का निरोध, करें तो
शिक्षा का प्रसार करें हम
आज हमें शपथ लेनी है
बच्चों का कल्याण करें हम

पापा

मेरे पापा अच्छे पापा
हमको कथा सुनाते पापा

मेरे पापा मोटे पापा
दिखने में हैं छोटे पापा

चश्मा एक लगाते पापा
डांट भी तो पिलाते पापा

अनुभव की तो खान हैं पापा
जीवन की मुस्कान हैं पापा

ऑफिस से घर आते पापा
ढोकला, चॉकलेट लाते पापा

सदा प्यार करते हैं पापा
बच्चों के सर्वस्व हैं पापा

गुरु

सदियों से हम गुरु का
अभिनंदन करते हैं
गुरु को ईश्वर तुल्य समझते
उसका वंदन करते हैं

गुरु के मार्दर्शन से ही
सारा ज्ञान उपजता है
आत्म चैतन्य हो जाता है
मन शीतलता को पाता है

सांसारिक या हो आध्यात्मिक
सब ज्ञान शिष्य पा जाता है
गुरु में ईश्वर के दर्शन कर
वह ईश तत्व को ध्याता है,

दोस्त

ऐसे थे दोस्त
गाली देकर
दरवाजे पर लात मारते
उपनामों से पुकार कर
बुलाते थे

बहुत पढ़ लिया बे!
चल अब घूमने
चल देते तब
लाला बाजार की ओर
वहां से कोई मंदिर
या किसी
पहाड़ की यात्रा

सड़क किनारे
किसी चाय की दुकान पर
आपस में चंदा करके
चाय पीकर
देर शाम लौटते
अपने अपने
घौंसलों में

आज दोस्ती का
कितना अवमूल्यन
हो गया है
उस समय के 50 दोस्त
आज एक के बराबर है
वह एक भी
ढूंढे से नहीं मिलता

एक ही मिलता
पचास पा जाते

उन दोस्तों की गालियों
को याद कर
अपना मानसिक सम्मान
बढ़ाता हूँ
और सपनों की गलियों में
दोस्तों के साथ घूमने को
करवटें बदलता
रहता हूँ,
काश!

होली

हाशिये में है अब ठिठुरन
रजाइयां दुबक गई कोने में
उल्लास उमंग की हलचल है
फिर आई इक टोली है

फिर आई इक टोली है
रंग बिरंगी गोली है
ठेलम ठेल की रेली है
आई क्या फिर होली है

बाजार यूं गुलजार हो गया
सड़कें लाल हरी हो ली हैं
बाल-वृद्ध हो गए युवा हैं
मेरे शहर की क्या होली है?

उल्लास उमंग का रंग उड़ता है
पिचकारी का शोर बहुत है
भाभियां सहमी सहमी सी हैं
देवर में अब जोर बहुत है

रंग अबीर गुलाल की मस्ती
गुझिया ही है जी में बसती
गायन में शृंगार सरलता
फिर छाई वह रोली है

रंगों की है दुनिया न्यारी

भंगों की इसमें छवि प्यारी
चिन्ता का लवलेश नहीं है
फिर दिल में खुशबू घोली है।

पूरे हफ्ते भीग न पाएं
ये तो संभव खूब नहीं है
बच बच के कितना भी निकलो
शाम तलक पूरी होली है

राग-द्वेष भी जल जाते हैं
होली में सब मिल जाते हैं
आपस में बस भाई चारा
कोयल की सी बोली है

फिर आई अब होली है

हिन्दी

उन्नति का यह मूलाधार
साहित्यं का शुभ व्यापार
हिन्दी को अब गले लगाओ
भारत के सपनों का द्वार

हिन्दी मेरी प्रिय भाषा है
देश एकता की आशा है
निज भाषा को अपनाओ अब
समय की यही प्रत्याशा है

विदेशी भाषा बहिष्कार
अपना ही हो आविष्कार
उन्नति का जो मूलाधार
हिन्दी भाषा हो स्वीकार

हिन्दुस्तान की शान है हिन्दी
अपनों की पहचान है हिन्दी
प्यार का ही अरमान है हिन्दी
हिन्दी में गाऐं अब हिन्दी

अपने घर में ठौर नहीं है
अब तक आई बौर नहीं है
हिन्दी को सींचों और सीखो
बेगानों का दौर नहीं है

गणतंत्र

सबसे सुन्दर सबसे बेहतर
है भारत भू का गणतंत्र
सर्वधर्म समभाव सभी जन
समानता का ही एक मंत्र

जाति धर्म सम्प्रदाय सभी से
परे रहने का जनतंत्र
भेदभाव रहित संविधान पर
आधारित अपना गणतंत्र

सबका साथ सबका विकास हो
समरसता का ही आनंद
दुनिया ही कुटुंब है अपना
संदेश यही देता गणतंत्र

फूले और फले यह अपना
हिन्दुस्तानी जन गण तंत्र
इसी मंत्र से विश्व गुरु है
सर्वश्रेष्ठ यह प्रजातंत्र

कोरोना (1)

2020 के इस कोरोना
मैच में भाई
टॉस उसी ने जीता
कर दी गेंद धुनाई

बड़े बड़े विकेट ले डाले
रन आउट कर डाले
जो थोड़ा सा लापरवाह थे
हिट विकेट में डाले

ग्लव्स पहनकर, मास्क लगाकर
दूरी से अब खेलो
पूरी टीम आउट हो जाए
पहले इसके संभल लो

कोरोना (2)

2020-21 के सब विकार
बनकर दुःस्वप्न बिखर जाएं
तिमिर दूर हो कोरोना का
उमंग के रंग बिखर जाएं

मास्क, दस्ताने सैनिटाइजर और
दो गज दूरी की प्राचीरें
हों ध्वस्त सभी अब कोरोना की
कुंचित कलुषित जंजीरें

बिखरा हो जग के आंगन में
आलिंगन, लाड़ दुलार भरा
दुनिया में बने अब नया गीत
कोरोना रहित और प्यार भरा

कोरोना (3)

मैं ज्यों ही
लव वायरस से
संक्रमित हुआ
उसने मुझे
क्वारंटीन कर दिया

वो मास्क लगाकर
उड़न छू हो गई
मैं
सैनिटाइजर से
हाथ मलता रहा

मैं दो गज दूरी से
उसे ढूंढता रहा
वो मास्क दर मास्क
बदलती रही

मैं I.C.U. में
ऑक्सीजन लेता रहा
वो प्लाज्मा चढ़ाकर
चलती बनी

चाहता हूँ लव वायरस
का संक्रमण चलता रहे
और प्यार का कोरोना
फलता रहे।

कोरोना (4)

2020 था ऐसा साल
छाया था बस काल कराल
इसके जाने की खुशी
न जाने क्यों महकी

जाने दो इसको जाने दो
अब तो खुशियाँ आने दो
स्वागत तुम्हारा 2021
कोरोना को जाने दो

कोरोना (5)

2020 तुम अब जाओ
तुमने बहुतहि नाच नचायो
कोविड-19 को भेज कर तुमने
सकल दुनिया भरमायो

लॉकडाउन की परिभाषा भी
तुमने ही समझायो
कभी न सुनी, सही वो बातें
अकेले ही जीना बतलायो

ऐसे प्रतिबन्ध लगाए हम पर
सारी खुशियों को धता बतायो
सारे दुःख दूर करो अब
2021 तुम आ जाओ

कोरोना (6) पेरौडी

हो रहे हम विदा
गिरते, मरते साथियो
अब तुम्हारे हवाले
शहर साथियो!

गरमी बढ़ती गई
सांस थमती गई
फिर भी पैदल कदम को
न रुकने दिया
मिट गए हम, हमारे
तो कुछ गम नहीं
सर, शहरों का हमने
न झुकने दिया

बच गए तो फिर
आएंगे साथियो
घर पर ही रहें
सुरक्षित साथियो
अब तुम्हारे हवाले
शहर साथियो।

कोरोना (7)

रोज कुआं खोदें जब हम
तब ही पानी पी पाते
कुछ नहीं है काम आज तो
फिर भूखे ही सो जाते

वायुयान से आने वालों
की ही बातें सब करते
पैदल चलते, छाले पड़ गए
हमरी न कोई सुध लेते

हम अपनी ही रचना को
अब छूने तक को व्याकुल हैं
लॉकडाउन में डंडे खाते
घर पहुँचने को आकुल हैं

हम भी प्रजा आप की ही हैं
हमरे हित भी तो कुछ बोलो

कोरोना (8)

देश में चुनाव चुनाव का खेला चल रहा है
कुंभ का भी मेला अलबेला चल रहा है
चुनाव आयोग आंखें ही मल रहा है
कोरोना दिन-दूना, रात चौगुना फल रहा है।
अब जनता को ही स्वघोषित लॉकडाउन लगाना होगा
राजनीति से ऊपर है जन-जीवन
यह संदेश जताना होगा

कोरोना (9)

अफसोस है ये
फेसबुक मित्रों की संख्या
दिन-ब-दिन कम हो रही है

सत्यानाश हो तेरा कोरोना
तेरी दुश्वारी
दिन-ब-दिन ही बढ़ रही है

कामना है ये
जल्द से जल्द
वैक्सीन की डोज
हर किसी तक ही पहुंचे

और जीवन की ये बगिया
फिर पुराने ढंग से
महके !

कोरोना (10)

बच्चो, आया है कोरोना
नाहक इससे डरो ना

मास्क पहनना भूलो ना
दूर दूर से खेलो, ना

हाथ धोना बहुत जरूरी
बार बार ये कर लो ना

सेनिटाइजर बचाव करेगा
कपड़ों पर भी छिड़को ना

जब तक खतरा टल ना जाए
घर पर ही तुम रहो ना

लग रही है अब तो वैक्सीन
पापा-मॉम को भेजो ना

बच्चा वैक्सीन ट्रायल में है
नाहक भी अब डरो ना

बच्चो आया है कोरोना
धीरज से ही झेलो ना

कोरोना (11)

कंक्रीटों के जंगल में
महानगर के एक कोने में
कंक्रीट के फ्लैट में बन्द
मैं, जीवन की आध्यात्मिकता
का पक्ष जानने को
मजबूर हुआ हूं।

‘बहुतों के बीच
अकेला हो जाऊँ’
यह अभिशाप दिया है
महानगर ने मुझे
ऊपर से तपते लोहे पै
हथौड़ा
कोरोना ने मार दिया है,

अपने घर के बंकर में
छिपकर, कोरोना से
बचने का प्रयास
कर रहा हूँ,

बिलबिलाते हुए मुझे
मेरे अपने
मेरा गांव, मेरी गलियां
मेरा सब कुछ
याद आते हैं
पर, समझ रहा हूं
एक दिन तो
इन्हें बिछड़ना ही था
तो आज ही सही

अब नौ सौ चूहे खाय
सारे सांसारिक सम्बन्धों
से इतर
सर्वशक्तिमान की शरण ही
लगती बेहतर !
हे प्रभु! रक्षा करो

गृहिणी

मुझको है आराम कहाँ
मुझको है बस काम यहां
मैं त्याग की जीवित प्रतिमा
मध्यमवर्गी गृहिणी हूं

मैं कामायनी की श्रद्धा हूं
विश्वास ही मेरी पूंजी है
मैं विनय की प्रतिस्पर्धा हूं
बस प्यार ही मेरी कुंजी है

मैं पूरक हूं घर गृहस्थी की
आंखों में बच्चे रखती हूं
पति से कांधा मिला रही
परिश्रम का फल ही चखती हूं

घर परिवार निज गेह, धरा की
व्यापक है परिभाषा
सबकी प्यारी भाभी हूं मैं
इक इक जीवन की आशा

मेरे लिए दुरूह मगर हैं
ये सारे ही परिसंवाद
जब मैं लड़ सकती झंझा से
तुम क्यों बन जाते अपवाद

मेरी भी व्यथा पहचानो
मेरी कीमत भी अब जानो
मैं घर का हीरा हूं साजन
मुझे गृहिणी ही मत मानो

सुपरमैन

सुपरमैन मैं कहलाता हूं
सबको नाच नचाता हूं

नीले कपड़ों पर मैं देखो
लाल लबादा लाया हूं
अन्तरिक्ष के दूर ग्रहों से
उड़कर धरती पर आया हूं

आवाज से भी तेज चलूं मैं
फूंक मार कर जख्म भरूं मैं
सांसों से मैं बर्फ जमा दूं
अनहोनी को होनी करूं मैं

कुछ भी कर सकता हूं बच्चो
रोक नहीं कोई सकता मुझको
अद्भुत खेल खिलाता हूं मैं
अद्भुत मेरा जीवन समझो

सबके आर पार हो जाऊं
आकर्षण से बंधा नहीं मैं
आँखों से एक्सरेज निकलती
बदमाशों का सगा नहीं मैं

मैं अपने लिए नहीं जीता हूं
दीन गरीबों का रक्षक हूं
सूक्ष्म तरंगों को सुन लेता
पाप पापियों का भक्षक हूँ

मैं दोस्त तुम्हारा बनकर आया
काल्पनिक लोक से रिश्ता है
सुख-दुख में, मैं साथ रहूंगा
जग कहता मुझको फरिश्ता है

चलेंगे नैनीताल

गर्मी आई गर्मी आई
आ जाओ भई आ जाओ
चलेंगे नैनीताल

नैनीताल के कदम तले
कहलाता तल्लीताल
सिर पर सोहे नैना देवी
वह है मल्लीताल

रोप-वे की सैर करेंगे
नैनापीक से सलाम
फ्लैट में होगी ढेरों मस्ती
बोटिंग फिर बेमिसाल

एसी की नहीं जरूरत
पंखा ही करता कमाल
गुलाबी ठंड जहां बहती हो
वह मेरा है नैनीताल

जंगल जंगल चलते जाओ
आ जाओगे भीमताल
सात प्राकृतिक झीलें देखो
पा जाओगे सात-ताल

फिर क्या तुम सोच रहे हो?
जल्दी हो जाओ तैयार
आ जाओ भई आ जाओ
चलेंगे नैनीताल

लेकिन प्यारे बच्चो, देखो
यहां जाम का है बवाल
गाड़ी की पार्किंग का भी
बड़ा कठिन है यहां सवाल

इन सब चीजों का भी
अब रखना है तुम्हें ख्याल
सार्वजनिक वाहन का ही
करना तुम्हें है इस्तेमाल

शब्द

क्या मेरी वय
मेरे शब्दों को
चुरा ले गई है
या मेरे शब्दों के
दांत टूटने लगे हैं
उन पर
झुर्रियों का आवरण
चढ़ चुका है
या फिर
शब्दों की दृष्टि
पथरा गई है।
शब्दों के गर्भ में
जो शावक हैं
वह भी शब्द बनकर
उतरेंगे जमीं पर
या पुराने शब्दों की
वरिष्ठता ही काम आएगी,

शब्दों का बूढ़ा होना
केवल एक छलावा है
शब्द कभी बूढ़े नहीं होते
उनका पुनर्जन्म भी
नहीं होता
वे अजर और अमर हैं

क्या मेरे और
आपके शब्द भी?
या कुछ विशिष्ट लोगों
के ही शब्द
अमर होते हैं
शाश्वत होते हैं

नहीं-नहीं
सारे शब्द, हमेशा
व्योम में
गुंजायमान रहते हैं
और सदा ही
जवान बने रहते हैं

शब्द तो शब्द ही
होते हैं
किसी के भी शब्द !

किसान और शैतान

किसान कौन है?

किसान मैं हूँ
आप हैं
या फिर वो?

मेहनतकश मैं हूं
आप हैं
या फिर वो ?

शोषित मैं हूं
आप हैं
या फिर वो?

यदि वो किसान हैं
तो-

शैतान मैं हूं
आप हैं
या फिर वो?

जो भी हो किसान
ये या वो
उसी की जय हो

और हो,
शैतान की पराजय

नवरात्रि

प्रथम नवरात्रि को करें घट स्थापना
शुरू होगी नौ दिवसीय दुर्गा उपासना

शारदीय नवरात्र समागम
श्रद्धा और भक्ति का संगम

हिन्दुओं का प्रमुख आयोजन
पावनता परमानंद प्रयोजन

नौ दिन का उपवास मनोमय
दुर्गा के नौ रूप प्रभामय

भजन, कीर्तन और आरती
दुर्गा के गुण गाये भारती

नौ दिनों का भीषण युद्ध
महिषासुर का जीवन रूद्ध

गरबा और डांडिया सोहे
कन्या पूजन जन मन मोहे

नौ दिन दुर्गा का कर सुमिरण
भजन कीर्तन और जागरण

नौ दिन की साधना क्लेश हरेगी

विश्व शांति का उद्घोष करेगी

नाम बड़े दर्शन छोटे

महत्तम नगर की
एक अट्टालिका में
जिसे अपार्टमेन्ट कहते हैं
उसके 2 बीएचके आवास में,
जिसे फ्लैट कहते हैं,
गुम होकर,
रह गया हूं,
जैसे कुलांचे भरते हिरन
जंगल में
चीतों के आगमन की
चर्चा सुनकर
डरे, सहमे से
कहीं छुप गए हों।

दुनियावी
माया-मोह को
छलावा मानना
बाध्यता सी
हो गई है

कभी शांत जीवन की
तलाश में
पहाड़ों को ढूंढते थे,

अब जो मिला है
शांत जीवन
वह खुद ही
पहाड़ सा हो गया है

कभी-कभी
फ्लैट से बाहर निकल
यंत्रमानवों की भीड़ में
घुसता हूं

शायद कोई
परिचित मिले
अफसोस!
सभी चेहरे
अजनबी हैं,
अपनेपन से दूर
निराश हो
पुनः फ्लैट की
चहारदीवारी में
आकर
कैद हो जाता हूं

ऐ! शहर
मैं तुझमें कहीं
गांव ढूंढता हूं,
इस निरर्थक
प्रयास से

और अधिक
तनाव को प्राप्त
होता हूँ।

विडंबना यह कि
बड़े बड़े शहरो में, मैं
छोटी छोटी बातें ढूंढता हूँ।

रेल भाई रेल

छुक छुक करती
आती रेल
हमारी अपनी
भारतीय रेल

1853 में जन्मी थी
मुंबई से ठाणे
दौड़ी थी
भाप का इंजन लेकर
सरपट
हमारी अपनी
भारतीय रेल

जगह-जगह की सैर
कराती, तीर्थ यात्रा
व्यापार कराती
गरीबी-अमीरी का
नहीं करती भेद
हमारी अपनी
भारतीय रेल

खान पान की चीजें सारी
यही पहुँचाती
कन्या कुमारी
कश्मीर तलक
सुगमता प्यारी
देश एकता की वाहक है
हमारी अपनी
भारतीय रेल

14 लाख रेल कर्मचारी
हमें दिलाते
सुविधा सारी
लाखाधिक किमी तक
यह खेले
जनहित की पारी
हमारी अपनी
भारतीय रेल

29 प्रकार की ट्रेनें लेकर
एशिया में है
प्रथम स्थान
सात हजार से ज्यादा स्टेशन
300 से ज्यादा है जंक्शन
सभी जगह है मेल कराती
हमारी अपनी भारतीय रेल

इतना बड़ा नेटवर्क हमारा
दुनिया भर में
तीसरा स्थान
13 हजार से ज्यादा यात्री
ट्रेनें
पहुंचाती मंजिल पर
हमको
हमारी अपनी
भारतीय रेल

67,500 लगभग
किलोमीटर की लम्बाई
लौहपथ गामिनी का
संसार

उद्योग कृषि की जीवनदायिनी
आर्थिक जीवन का आधार
हमारी अपनी
भारतीय रेल।

भारत की वंदना
करते हैं
वंदेभारत और गतिमान
शताब्दी से दुरन्तों लेकर
राजधानी पर हो विश्राम
ताजा भोजन भी देती है
हमारी अपनी
भारतीय रेल

एसी और वाई फाई से
लैस है
अपनी देखो चेयर कार
चाय की चुस्की संग
पढ़ते है
आज के ताजा समाचार
बुलेट ट्रेन के इंतजार में
हमारी अपनी
भारतीय रेल।

चुनाव चौकड़ी

तू चल मैं आता हूं
उसको भी मैं लाता हूं
अब नहीं है यहां गुजारा
कुर्सी वाला दल ही प्यारा

लाठी को अब फेंक यहां पर
पार हो गई गहरी धारा

जहाज डूबता लगता है ये
माल असबाब लपेट ले सारा

चढ़ जा बेटा उस वाहन पर
जो पहुंचा दे ठौर किनारा

अनुपम

वृक्षों का चुम्बन
लेता हुआ
बादलों का झुण्ड
पल भर में
सारे जंगल को
अपने आगोश में
ले लेता है

अमृत की वर्षा के बीच
कभी कभी
क्षणिक हंसती हुई
उसकी दंतावलियां
तड़ित सी चमकती हैं

घोर गर्जन के बीच
वृक्षों और बादलों के मध्य
क्या हो रहा है
यह दीख नहीं पड़ता

संतृप्त पलों के बाद
आवारा बादल
उड़ जाते हैं
धूप को आमंत्रण देकर

नहाई, खिली धरती
और जंगल
उल्लसित होकर
मादकता बिखराते हैं
अनुपम।

समभाव

वाम भाग में
सुशोभित पत्नियां
स्वतः वामपंथी
हो जाती हैं
उनके पास
खोने को कुछ नहीं होता
और पाने को सब कुछ

वाम भाग में
स्थान न मिलने से
दुःखी प्रेमिकाऐं
दक्षिण पंथी हो जाती हैं

गुरिल्ला युद्ध करते हुए
कुछ कुछ खोकर
सब कुछ पाने को
आतुर रहती हैं

और
पति बेचारा
तटस्थ सा दिखता हुआ
दोनों पंथों को
समभाव से
स्वीकार करना चाहता है

पित्र दर्शन

पारिजात के श्वेत पुष्प थे
तृण वेदी थी हरी हरी
अश्रु बिन्दु सी ओस खिली थी
ऊषा से लोकोत्तर हे!

तीव्र कसक से ईश्वर भी
हिमालयों से बह निकले
आत्मा के स्वामी से मिलकर
गेरू सा पुलकित बोध अहो !

स्मृति बसी थी पूर्व जन्म की
सन्यासी का ताना बाना
ईश प्रेम की स्वप्निल धारा
कहां चला प्रतिशोध कहो !

मूक रूदन का अविरल स्वर भी
तीर्थाटन का गीत कहे
परिव्राजक से घूम घूम कर
स्वामी एक अनन्त मिले।

दीपमालिका

शुभ दीपावली है आई
अनेक खुशियां है लाई

घर घर दीप जलेंगे
शहर शहर मचलेंगे

बिजली की लग गई है लड़ियां
बच्चों ने छोड़ी फुलझड़ियां

आंगन आंगन बने रंगोली
कचरे की अब जलेगी होली

पटाखों को बोलेंगे ना ना
स्वच्छ पर्यावरण को हां हां

फूल मालाऐं खेल खिलौने
उपहारों के तो क्या कहने

एक दूजे को देंगे बधाई
शुभकामनाओं संग मिठाई

लौटे बन से सियाराम जी
संग मे आए हनुमान जी

अंधकार में जो भरमाऐं
आओ उनको राह दिखाऐं

दीन दुःखी के घर महकाऐं
आओ एक एक दिया जलायें

जो समर्थ है आगे बढ़कर
असमर्थों के दीप जलाऐं

खुश होगा इस जग का माली
सभी घरों, जब मने दिवाली

दीप जलाएें

मेरी बाई के घर में कब
कहां दिवाली आई है
वही पुरानी रोजाना की
मनहूसियत ही छाई है

घर के दैनिक खर्चों की
जुगाड़ भरी मारामारी
वही बालकों की किच-किच
मेहनत की दुनियादारी

सास-ससुर की दवा दारू
टपकते छत की उलझन भी
साइकिल का टायर भी पंचर
घर गृहस्थी की सुलझन भी

कामवाले घर के मालिक से
कुछ इनाम मिल जाएगा
तब ही बच्चों की फुलझड़ियां
और सामान आ पाएगा

बाई के घर के दीपों में
रौशनी का प्रबंध करो
हर घर तक दीवाली पहुंचे
ऐसा कुछ अनुबन्ध करो।

इंदौर

मेरे देश का सबसे स्वच्छ शहर
इंदौर ही है वह भव्य शहर
मिनी मुंबई है कहलाता
मध्य प्रदेश का यह बड़ा शहर

इन्द्रपुर से इन्दौर तलक
इतिहास बनाता गया शहर
मिलनसार हैं, मददगार हैं
जो लोग बसे इंदौर शहर

खान पान का वैभव बसता
नमकीन का है ये मुख्य शहर
सप्ताहांत दाल बाटी बाफले
नाश्ता करता पोहे का शहर

सौन्दर्य शांति का अद्भुत संगम
तकनीकी शिक्षा का केन्द्र शहर
मीठी भाषा और मधुर बोल का
पर्याय बना यह स्मार्ट शहर

देवी अहिल्या की नगरी है
उत्सव का अनमोल शहर
मिल-जुल कर मनती दीवाली
राजवाड़ा की होली का शहर

दिन रात सफाई की चर्चा
कूड़े कचरे से उन्मुक्त शहर
संगीत साहित्य में भी अजेय है
भारत का यह रत्न शहर

गुरुग्राम

राजधानी से सटा हुआ है
उत्तर भारत का गुरुग्राम
आर्थिक और तकनीकी हब है
गुरु द्रोणाचार्य का ग्राम

अहीर कबीले द्वारा शासित
था यह सपनों का साम्राज्य
शीतला माता मंदिर भी
धर्म को करता है अविभाज्य

एक नवम्बर 1966 के दिन
हरियाणा ने दिया जनपद सम्मान
तब से बढ़ता चला गया है
सुबह और शाम हमारा गुरुग्राम

मारूति ने पहियों को गति दी
आर्थिक और बैंकिंग अवदान
मिलेनियम सिटी के रूप में उभरा
साइबर युग का अग्रणी प्रधान

मल्टीप्लैक्सेस और शॉपिंग माल्स
साथ में स्ट्रीट फूड कमाल
पाव भाजी, सरदार जलेबी
गांधी पकौड़े, चूर चूर नान

अभिजात्य वर्ग का सुदृढ़ शहर
प्रति व्यक्ति आय में तीसरा स्थान
हरियाणा का प्रदीप बना यह
गुड़गांव हमारा गुरुग्राम,

जयपुर

‘पधारो म्हारे देश’ बोलता
राजपुताने का जयपुर
राजस्थान की राजधानी
गुलाबी नगरी है जयपुर

महाराजा सवाई जय सिंह जी ने
स्थापित करी थी बरसों पहले
पहला व्यवस्थित शहर बनाया
जिसमें राजा प्रजा मिलकर रहले

बड़े बड़े है दुर्ग यहां पर
राजमहल भी हैं बढ़ चढ़ कर
वास्तुकला संस्कृति का संगम
ऐतिहासिक हैं सभी धरोहर

भारत का पेरिस कहलाता
हवा महल, म्यूजियम सुहाता
जंतर मंतर भी प्यारा जल महल है
सिटी पैलेस तो आंख चुराता

राजपुतानी शान की शोहरत
नाहरगढ़, आमेर किला बखाने
राजाओं के अन्तःपुर से
दरबार हॉल तक देखे ठाठ सुहाने

जयपुर की रजाई फेमस
हस्तकला भी अनुपम सुंदर
दाल बाटी, चूरमा का तो
स्वाद निराला, सबसे बेहतर

शिक्षा का भी केन्द्र यहां पर
यांत्रिकी, चिकित्सा, कोचिंग सेन्टर
विकसित शहरों की श्रेणी में
जयपुर का है उच्च स्तर

भारत के उद्योग क्षेत्र में
इसका अनुपम योगदान है
बजाज, गोयनका, मित्तल, बिड़ला
उद्यमियों के शहंशाह हैं

'आओ म्हारे देश पधारो'
जयपुर का संदेश है प्यारा
देश विदेशी सभी सैलानी
बतलाते हैं इसको न्यारा।

सरदार पटेल

31 अक्टूबर राष्ट्रीय एकता दिवस हमारा
सरदार पटेल जी का जन्मदिन ये प्यारा

किसान परिवार में जन्म लिए थे
बैरिस्टर बनकर वकालत किए थे
गांधी जी के संसर्ग में आए
स्वतंत्र राष्ट्र का सपना पाए
स्वतंत्रता आन्दोलन में कूद पड़े
फिरंगियों से तब खूब लड़े
खेड़ा संघर्ष से आगाज किया
बारडोली सत्याग्रह तक संघर्ष किया
राष्ट्र को समर्पित सरदार बन गए
स्वतंत्रता संग्राम का आधार बन गए
राष्ट्रहित में पद लालसा का त्याग किया
गृहमंत्री बन देश एकता का काम किया
रियासतों को भारत में शामिल करवाए
राष्ट्र एकता के सूत्रधार लौह पुरुष कहलाए

एक भारत अखंड भारत का सपना पूरा किया
सरदार को तब देश ने भारत रत्न दिया
कांग्रेसी थे पर भाजपा सरकार ने भी सत्कार किया
गुजरात में स्टैच्यू ऑफ यूनिटी का यादगार दिया।

आपका जन्मदिन एकता दिवस बन गया
सुदृढ़ और श्रेष्ठ भारत का सबब बन गया।

छठ पूजा

कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष में
होता छठ पूजा आयोजन
लोक आस्था का महापर्व है
सूर्यदेव और षष्ठी मैया का पूजन

36 घंटे का निर्जला व्रत है
संतान हेतु हितकारक मानो
नहाय खाय से शुभारंभ है
नदी स्नान का पर्व भी जानो

द्वितीय दिवस खरना कहलाता
सूर्यास्त तक व्रत रख कर भाई
भोग सूर्य को अर्पित करके
तब भोजन पाती है माई

तृतीय दिवस है मुख्य पर्व
भगवान सूर्य का अर्ध्य दिवस
डूबते सूर्य की आराधना का
यह अनुपम अप्रतिम दिवस

चौथे दिन का उगता सूरज
जब पाता व्रतियों से अर्ध्य
दीन दुखी को अन्नदान से
छठ माता कर मनोकामना पूर्ण

किताब जिंदगी

यादों का एक एक पन्ना
भरता जाता है
जीवन की किताब
बनती जाती है

यादों के गुलदस्ते की
यह जिंदगी
स्मृति बनकर
अंकित हो जाती है

रह रह कर
कोई पन्ना उलट
जाता है, भीनी
यादें फैल जाती हैं

कहीं, जिंदगी का
उलझा पृष्ठ
मुंह चिढ़ाता है
कहीं कहीं
कोई जटिल अध्याय
आज भी
सिहरन दे जाता है।

किसी की किताब
में गुलाब के दबे
फूल इतराते हैं

पुराने पन्नों पर
धूल जमा हो
चुकी है तो
कुछ पन्ने
अभी कोरे बचे हैं
इन कोरे पन्नों पर
अच्छा सा
उपसंहार लिख डालें
और पूरी किताब
प्रकाशित होकर
गुम हो जाए
दुनिया के पुस्तकालय में
शायद
दीमक के इंतजार में

सरगम सारे

घने जंगलों के बीच
तब ढूंढ लिया था मुझको
अब शहर में बस गए हो
तो पहचानते नहीं

साथ चलने के वादे किए थे
तब पथरीली राहों में भी
अब राजमार्ग पर है जीवन
तो दो पल रुकते भी नहीं

सब कुछ तुम्हारा तुम भी हमारे
तब हर कदम पे ये आवाज थी
अब क्षीण है कृशकाय काया
तो हाल तक पूछते नहीं

छुप छुप के कैसे मिलते थे
तब नाराज था जमाना भी हमसे
अब टूट गए बंधन वो सारे
तो मिलने की कोई तमन्ना नहीं

बदन की खुशबू दिलों की धड़कन
तक एक थे सारे ही सरगम
अब संगीत ही अपना जहां पर
तो क्रंदन ये मेरा सुनते नहीं

सारी रात नीदें भी बेचैन करती
तब धरती शयनगार होती थी अपनी
अब शीशे के महलों की है मेजबानी
तो चैन की क्यों नींद आती नहीं ?

यू के स्थापना दिवस

अनेक वर्षों आंदोलन से
पाया यह प्यारा प्रदेश

मुजफ्फरनगर का जघन्य कांड
देता है हमको संदेश

जो शहीद हुए थे अपने
उनको श्रद्धाजंलि अशेष

पौराणिक यह राज्य हमारा
देवभूमि का दे संकेत

हिमालय के आंगन में पलता
प्रदूषण का नहिं लवलेश

क्रीड़ा करते सभी देव हैं
असुरों का नहीं प्रवेश

केदार और मानस खंडो में
व्याप्त सदा रहते हैं महेश

27वां राज्य बन गया
अपना यह पावन प्रदेश

सार्थक हुए क्या स्वप्न हमारे
पूछता है जन मन का विवेक

क्या खोया हमने क्या पाया
चिंतन करें अनेकानेक

गढ़ कुमूं का युग्म बनाकर
बनना है हमको व्योमेश

बाल दिवस

बच्चे होते प्यारे प्यारे
होते मन के राजदुलारे

कर्णधार हैं हमारे बच्चे
उन्हें दिलाएं संस्कार अच्छे

बच्चों को हम प्यार से सींचें
निर्मलता से उनको भींचें

नेहरू जी को प्यारे लगते
बच्चे उनको चाचा कहते

इसीलिए जनम दिन उनका
बाल दिवस है हम सबका

बच्चों का शोषण ना हो
यही हमारा भी सपना हो

बाल श्रम है नहीं कराना
बाल दिवस से ये भी जाना

बचपन को हम खूब दुलारें
देश का भावी समय संवारें

अटल

ग्वालियर में जन्म लिया था
फैलाया दुनिया में सुयश
"हिन्दू तन-मन, हिन्दू जीवन
रग-रग हिन्दू, मेरा परिचय"

जन्म से साहित्यिक व्यक्तित्व रहा
स्वयं सेवक बन शुरू हुआ बचपन
आजीवन अविवाहित रहकर
समर्पित किया देश को जीवन

पत्रकारिता से निखर निखर कर
पत्रिकाओं का किया सफल संपादन
भारतीय जनसंघ के ध्वजवाहक
झरते श्रीमुख से ओजस्वी भाषण

विपक्षियों में भी जनप्रिय थे
नेहरू ने देखी भावी PM की छाया
मिलनसार थे अजात शत्रु थे
हिन्दी को UN तक पहुंचाया

उनकी इक्यावन कविताएं
मील का पत्थर बन उभरी
साहित्य जगत से राजनीति का
गठजोड़ बना कर ही उतरी

भाजपा से पी.एम. बनकर
यह गौरव तीन बार पाया
पोखरण परमाणु परीक्षण कर
भारतीय शक्ति का अहसास कराया

दिल्ली लाहौर बस सेवा चलाकर
पड़ोसी सौहार्द की पहल करी
नहीं माने तो अटल हो गए
कारगिल में पाई विजयश्री

राजमार्गों का जाल फैलाया
शहर शहर को जोड़ दिया
असली भारत-रत्न हमारे
राष्ट्रधर्म को नव मोड़ दिया।

नोएडा, यात्रा जारी है

पच्चीस वर्ष का युवा शहर हूं
सत्रह अप्रैल को अस्तित्व में आया
उद्योगों को पल्लवित करूं मैं
यही संदेश शासन से पाया

चौड़ी और मखमली सड़कें
वृक्षों से आच्छादित रहती
सुन्दरता घट में बसती है
स्वच्छता का आलिंगन करती

हरियाली का ताना बाना
सर्वश्रेष्ठ शहरों में आता
अनवरत विद्युत का प्रवाह है
रौशनी से खूब नहाता

न्यूनतम प्रदूषण मानक वाले
उद्योगों को प्राथमिकता देता
सूचना प्रौद्योगिकी का स्वागत है
कुशल मानव संसाधन रहता

बहुराष्ट्रीय अधिष्ठानों का गौरव
साफ्टवेयर का शहर हमारा
रत्न आभूषण भी खनकते
विशेष आर्थिक क्षेत्र है प्यारा

शिक्षा का माहौल गजब है
बहुशिक्षा के विश्वविद्यालय
खाने पीने और ठहरने
पंचसितारा आवासालय

स्टार्टअप के विशिष्ट अवसर हैं
भूखण्ड हैं, आवासीय टावर भी
बहुत पास है हवाई अड्डा
मेट्रो का अपना जलवा भी

अत्याधुनिक सभी सुविधाऐं
तो पौराणिक स्थल यहां पर
महादेव, द्रोणाचार्य, रावण के
अनेकों सुन्दर साक्ष्य यहां पर

नोएडा का अट्टा मार्केट है
सब चीजों का संगम
दिल अपना, सीपी कहलाता
सैक्टर 18 का दृश्य विहंगम

वाटर पार्क और इस्कॉन मंदिर
GIP, DLF, सदृश मॉल्स हैं
ओखला पक्षी विहार भी देखें
गोल्फ कोर्स और प्रेरणा स्थल हैं

नवीन ओखला औद्योगिक विकास प्राधिकरण
जन्म दिन 'नोएडा दिवस' कहाता
अकुशल से उच्च पदों के रोजगार का
कुम्भ यहीं पर है इठलाता

पल पल प्रगति के सोपानों का
निर्माण अभी भी भारी है
कितनी और मंजिलें पाने
नोएडा की यात्रा जारी है

यातायात नियम

आओ पब्लिक यातायात में
हम भी कुछ सहयोग करें

जिम्मेदार नागरिक बन कर
नियमों का उपभोग करें

वाहन को पार्किंग में रखें
सड़क पर ना अवरोध करें

नियत लेन में चलेगा वाहन
ऐसा कुछ प्रयोग करें

ओवरटेक से विरत रहें हम
दुर्घटना से गतिरोध करें

नो-एन्ट्री का ध्यान भी रखें
अपना चालन निर्बाध करें

सीट बैल्ट और हैल्मेट का
हमेशा हम उपयोग करें

जरूरत पर ही हॉर्न बजाऐं
ध्वनि प्रदूषण ना शोर करें

गति पर रहे सदा नियंत्रण
वांछित गति निर्विरोध करें

अपनी लेन में चले चलें
सुखद यात्रा का संयोग करें

ट्रैफिक सिग्नल का हो पालन
उल्लंघन का विरोध करें

करे सतर्क चेतावनी संकेत
मंगल यात्रा का अनुरोध करें

मोबाइल पर बात नहीं हो
एकाग्रता का सदुपयोग करें

नशे में गाड़ी नहीं चलाएं
ना ही सड़कों पर उत्पात करें

आओ पब्लिक यातायात में
हम भी कुछ सहयोग करें

नया वर्ष

पता चला है
फिर आने वाला
एक दो दिन में
नया वर्ष

पिछले वर्ष भी
इन्हीं दिनों
आया था
एक नया वर्ष

देखा पूरे वर्ष
वही हर वर्ष की तरह
कुछ बंदे नौकरी पा गए
कुछ बंदे अपने घर को गए
कुछ बंदे पैदा हुए
तो कुछ बंदे मर गए
कुछ बंदे डूब गए
तो कुछ बंदे तर गए,
तैर रहा था
उनमें ही यह
उलझा उलझा
नया वर्ष

नई सोच हो
नया जोश हो
तो प्रत्येक दिवस है
नया वर्ष
नहीं तो
वही पुराने वृत्त चक्र में
घूम घूम कर
ठहर जाता है
नया वर्ष।
पता चला है
नये वर्ष की
धूम मचेगी
सबके हिस्से
आ पाएगा क्या
एक एक कतरा
नया वर्ष?
या कुछ
बड़ी झोलियाँ
ही समेट लेंगी
सारा सारा
नया वर्ष

शोषित-वंचित
तुम भी सुन लो
राजा का है यह
उद्घोष !
मनाना होगा

झख मार कर
तुमको भी यह
नया वर्ष

पता चला है
फिर फिर
आता रहेगा
एक नया वर्ष

ज्योतिर्मठ क्रंदन

नहीं चाहिए मुझे तुम्हारे
वैभव और आधुनिक विकार
नहीं चाहिए मुझे तुम्हारे
पंच सितारा विष, उपहार

नहीं चाहिए रेल तुम्हारी
सुरंगों की नहीं मनमानी
चौड़ी सड़कें तुम्हें मुबारक
हरियाली दो हमें सुहानी

नहीं चाहिए रिजॉर्ट तुम्हारे
जंगल में मंगल रहने दो
बड़े बड़े हों भवन तुम्हारे
हमें घरों में ही रहने दो

चकाचौंध और भीड़ भाड़ की
संस्कृति हमें नहीं भाती है
देवों के ध्वजवाहक हैं हम
हमें सरलता ही आती है

चिपके थे जिन पेड़ों पर हम
उन्हें धड़ाधड़ काट रहे हो
अनसुनी कर वृक्षों की चीखें
भू-माफिया पाल रहे हो

जन कोलाहल से दूर
हमारी शांति बने रहने दो
जहर घुल रहा है पहाड़ में
यहां क्रांति मत करने दो

धंसती धरा, सिसक सिसक कर
अपना क्रंदन हमें बताती
रोक लो डायनामाइट बुलडोजर
ये अनुरोध वह हमें जताती

देवभूमि है शांत हमारी
इसको गांवों में जीने दो
शहरीकरण विनाश हमारा
प्राकृतिक सुधा हमें पीने दो

भूस्खलन, बादल फटने से
पहले ही हैं त्रस्त यहां पर
ऊपर से सरकारी दोहन
सब कुछ करता ध्वस्त यहां पर

हिमालय से पुकार उठी है
देवभूमि को तुरत संभालो
बचा लो उत्तराखंड हमारा
ऐसे जतन सभी कर डालो।

फिर खिलेंगे

मेरे गीतों को अनमन सी
नज़र लगी है जाने किसकी
दुर्बलता और उदासी
तन मन की सांसें हैं सिसकी

कभी फूलता फलता उपवन
भंवरों की गुंजन थी बसती
भांति भांति के खिले फूल थे
भांति भांति की आभा छिटकी

गीतों में तब प्यार भरा था
सांसों की सरगम बजती थी
बहुरंगी था जीवन उनमें
बेहद दीवानी दुनिया थी

धीरे धीरे प्यार बह गया
धीरे धीरे रार बढ़ गई
पतझर की दस्तक सुनते ही
छन्दें सब वीरान हो गई

फिर से खिलने को आतुर मन
भावों को चुगता है उन्मन
पर पतझड़ से पहले वाले
फूलों का आधार अकिंचन

जी चाहे

तेरे केशों के झुरमुट में
खो जाने को जी चाहे
दुनिया से बेखबर रहूं
अब सो जाने को जी चाहे

बहुत दिनों से सुनी नहीं हैं
तेरी बातें जी भर कर
देर रात तक बतियाने को
जाने क्यों ये जी चाहे

मेरे कांधे सर तेरा हो
दुनिया का बंधन ना हो
हौले हौले घुल जाने का
आपस में, अब जी चाहे।

बाल कविता (कुक्की)

बहुत दिनों के इंतजार से
कुक्की है घर में आया
अपनों के सपनों को सच कर
संग अपने खुशियां लाया

मात-पिता को रौनक दी तो
दादू और दादी हर्षाए
नानू और नानी ने प्यारे
मंगलगीत संग में गाए

लुटाया जी भर प्यार बुआ ने
फूफा जी ने गाना गाया
विवान और निवान ने उसको
निज टीम में शामिल करवाया

ननिहाल में खेल रहे अब
मामा-मामी को भरमाया
हल्द्वानी की भीड़ भाड़ में
कुक्की अपना है शरमाया

कहता है इब खेल के होली
जाऊंगा नोएडा, घर अपने
दादू दादी और बुआ के
करने हैं अब पूरे सपने

विवानिवान की टीम में अब
शामिल हो, गौरव पाऊंगा
कभी नमामि को बुलवाकर
नाक में दम कर डालूंगा।

बजे डमरू

आशुतोष तुम आ जाओ
चिन्ता सकल मिटा जाओ
गरल विश्व का पी लो तुम
अमृत की धार लुटा जाओ

शरण में अपनी ले लो प्रभु
सुख शांति के द्वारे खोले प्रभु
कलुष हटा दो जग का सारा
निर्मलता का मधु ही घोलो प्रभु

कर दो डमरू की ध्वनि अविरल
हर लो सब वेदना विकल
प्रभा पुंज को लेकर प्रभु
जगती का तामस करो तरल

महिमा अपरंपार तुम्हारी
द्वार मुक्ति का खोल पुरारी
राग-द्वेष को दूर करो प्रभु
खिले जगत में प्रेम की क्यारी

दुनिया में फैले कई गरल
सबसे हो तुम्हीं सरल सरल
भक्ति सुधा का ताण्डव हो
भावों से कर दो तुम विह्वल

आशुतोष तुम आ जाओ
चिन्ता सकल मिटा जाओ।

दाढ़ी दर्शन

तेरी दाढ़ी, मेरी दाढ़ी
मेरी दाढ़ी, तेरी दाढ़ी
मेरी दाढ़ी इसकी जैसी
उसकी दाढ़ी ऐसी वैसी

संसद के अंदर बाहर
है दाढ़ी का खेला
उसकी दाढ़ी काली कैसे
मेरी दाढ़ी से ज्यादा
इसमें कुछ गड़बड़ झाला

जंगल के आग जैसे
उसकी दाढ़ी
इतनी जल्दी कैसे बढ़ेली
जैसे हो गम का प्याला

उसकी दाढ़ी में कोई तिनका
नहीं मिला है अब तक
बिन तिनके की दाढ़ी ऐसे
बन सकती है झमेला

इस छोर से उस छोर ही
उसकी दाढ़ी का डेरा
मेरी दाढ़ी लगा चुकी है
सात समंदर का फेरा

परिपक्व है दाढ़ी मेरी
दाढ़ी हो तो ऐसी
उनकी दाढ़ी की तो
बस ऐसी की तैसी।

उत्थान

होगा अब उत्थान
करेंगे अब उत्थान

जल, कल, मल की
स्वच्छ व्यवस्था
करने का अरमान

पर्यावरण संरक्षण
का भी
रखेंगे अभिमान

पेड़ लगाओ
जल भी बचाओ
ऐसा ये अभियान

स्वस्थ हो तन मन
स्वच्छ पर्यावरण
का होगा अभिदान

करेंगे अब उत्थान
होगा अब उत्थान

महावतार

जय हो महावतार
तुम्हारी
जय हो बाबा जी

तुम हो अजर अमर अविनाशी
तुम हो सिद्धाश्रम के वासी
लाहिड़ी जी के परम गुरु हो
गृहस्थी में थे जो सन्यासी

परिव्राजक तुम हिमालयों के
यत्र तत्र सर्वत्र विचरते
क्षण में यहां तो क्षण में वहां
ऐसा उपक्रम तुम कर देते

आत्म तत्व का ज्ञान बताते
प्रभु से साक्षात्कार कराते
जीवन का मैं ही हूं सार
सुधीजनों को यह बतलाते

दुनिया का आनंद वृथा है
यह तो एक छोटा सा सपना
जब तुम खुद को पहचानोगे
परमानंद, तभी हो अपना

योगी कथामृत को पढ़कर
और अधिक जानोगे हितकर
'ओम क्रिया बाबा जी नमः' का
मंत्र जपें नित जी भरकर

क्रियायोग की दीक्षा लेकर
जीवन सफल बना डालो
आत्मा परमात्मा का दर्शन
निज का लक्ष्य बना डालो

गाऐं फाग

प्रिय
बसंत का आया मौसम
फूलों औ कलियों का मौसम

आओ रंग लें आज अभी हम
रंगीला रंगीला मौसम

भौंरे बैठे हैं पराग पर
मधुपर्क गिराता मौसम

आलू पापड़, दालमोठ और
दहीबड़े का मौसम

आओ हंस लें आज सभी हम
हंसने का है मौसम

आओ ढंग से मिल लें सबसे
मिलने का ये मौसम

आओ बस लें आज दिलों में
दिलवालों का मौसम

भेदभाव से दूर रहें अब

समरसता का मौसम

गाऐं गीत सभी जन मिलकर
गीतों का है मौसम

गावें फाग, मनावें होली
होली का इब मौसम

जीवन-राही

मंजिल आने ही वाली है
राही! अब तैयार रहो

खेलकूद कर बड़े हुए
फिर पढ़ने की जिम्मेदारी
पढ़ते पढ़ते यौवन की
दस्तक देती दुनियादारी

परीक्षा के परिणाम मुखी
जीवन की सब आशाऐं
बिन रोजगार के पलछिन
सबकी सुनी, कही भाषाएं

प्रभु के आशीर्वाद से
हुई तभी निर्वाह व्यवस्था
फिर तलाश हुई जीवन को
सुमधुर संगी युक्त अवस्था

बच्चों की फिर किलकारी
नौकरी की भी मारामारी
तब आई उनके पढ़ने की
उनकी जीवन आपाधापी

पढ़ा लिखा कर उनका भी
जीवन संवारने की बारी
जीवन यापन का जुगाड़ तो
शादी की चिन्ता है ठानी

सब कुछ ठीक से निभ गया
ईश्वर का आशीर्वाद मिला
मेरे मित्र, शुभचिंतक जन की
प्रार्थना का ही सिला मिला

प्रौढ़ावस्था का आगमन
नैराश्य भरा सा जीवन
प्रभु की ओर मुखातिब
दुनियावी माया हुई मलिन

प्रभु से विनती यही हमारी
आत्म साक्षात्कार कराओ
प्रभु से आशीषें मिलने का
कोई तो उपचार बताओ

कब टूटे यह तारा गिरकर
धूमकेतु की राह कहो!
मंजिल आने ही वाली है
राही! अब तैयार रहो।

चाँद पर

चन्दा की पावन धरती पर
हमने ध्वज लहराया है
चालीस दिनों की कठिन यात्रा
का प्रतिफल अब पाया है

इसरो ने अपने मिशन लिए
बरसों परिश्रम बरसाया है
विभाकर के दक्षिणी ध्रुव में
'विक्रम' अपना दिखलाया है

'प्रज्ञान' उलीचा जो विधु पर
दुनिया का ये चौथा पग है
वैज्ञानिको! तुम्हारा वंदन
अभिनंदन करता सारा जग है

बहुत बधाई हो सबको
भारत माता का गौरव है
चन्दा मामा को छू करके
फैलाया जग में सौरभ है
(विक्रम – लैण्डर)
(प्रज्ञान – रोवर)

करें प्रार्थना

कई प्रदेशों से आए हैं
मजदूरी करने उत्तरकाशी
मजबूरी परिवारों की थी
जो उन्हें यहां लेकर आई

फंस गए इकतालीस बंदे हैं
विपदा उन पर है आई
सुरंग में बंद कई दिनों से
अब तलक निराशा ही पाई

इन्हें बचाने के उपक्रम
शीघ्र सफलता को पाएं
सभी सकुशल बाहर आएं
और मिलकर खुशी मनाएं

अनुरोध हमारा है सबसे
उनके हित दुआ करो मिल के
करें प्रार्थना आज सभी जन
जल्दी उनका जीवन महके

अनमोल जीवन

जीवन है अनमोल आपका
जीवन का सम्मान करो
कई जनम के बाद मिला है
मत इसका अपमान करो

जीवन एक युद्धस्थल है
डटे रहो तन मन धन से
पीठ दिखाना पाप यहां पर
जीतो इसको अपनेपन से

निराशा और हताशा का तुम
नहीं कुहासा छाने दो
खुश रहो खुशी ही बांटो
खुशियों के मौसम आने दो
(विश्व आत्महत्या निरोध दिवस पर)

चैम्पियन ट्रॉफी जीतने पर (2025)

खुशियों भरा यह रविवार
लगा शाम को, ज्यों त्यौहार
दुबई से भारतीय टीम ने
भेज दिया अद्भुत उपहार

चैंपियन बना तीसरी बार
न्यूजीलैण्ड से पाया पार
24 साल पुराना बदला
ले डाला है अबकी बार

रोहित शर्मा की कप्तानी
बारह वर्षों की नाकामी
फिर आया लेकर यह कुंभ
बल्लेबाजों की मनमानी

रोहित की कप्तानी पारी
टीम भावना लाई न्यारी
रवीन्द्र ने जीत का चौका
देकर चैंपियन ट्रॉफी वारी

हुई टीम पर धन की वर्षा
बल्ले को सबका मन, तरसा
हुए क्रिकेट प्रेमी हैं गदगद
सारे भारत का मन हरषा

माखनलाल चतुर्वेदी
(हमारे माखन)

हिन्दी साहित्य का यह माखन
मध्य प्रदेश में अवतरित हुआ
शिक्षक बन कर राष्ट्रवाद को
सिंचित और पल्लवित किया

प्रभा, प्रताप व कर्मवीर से
राष्ट्र प्रेम प्रज्वलित किया
स्वतंत्रता के आंदोलन में
सक्रिय होकर जेल गया

छायावाद में अवगाहन कर
हिन्दी साहित्य समृद्ध किया
पद्य, गद्य और पत्रकारिता
तीन पक्षों को सिद्ध किया

सरल भाव व प्रकृति प्रेम से
देश प्रेम को मथ डाला
'एक भारतीय आत्मा' ने
'अभिलाषा' का सच कह डाला

देव पुरस्कार, साहित्य अकादमी
पद्म भूषण से अलंकृत हुआ
'समय के पांव' देखते देखते
भारत जनमानस उपकृत हुआ

रक्षा सूत्र

प्रतिवर्ष श्रावण माह में
पूर्णिमा को होता उत्कर्ष
बहन अपने भाई को
बांधे रक्षा सूत्र सहर्ष

भाई देता वचन बहन को
ताउम्र रखूंगा तेरा ध्यान
कोई भी विपदा आए तो
तोड़ दूंगा निज स्वाभिमान

द्रोपदी ने बांधी थी चीर
भगवान कृष्ण के, हो अधीर
चीर-हरण पर दौड़े आए
मिटाई तब बहना की पीर

गुरु अपने यजमानों को
बांधे निज सम्मानों को
सरहद की रक्षा जो करते
राखी दें वीर जवानों को

ऑपरेशन सिंदूर

हंसते खेलते, खिलखिलाते
माथों का सिंदूर मिटा डाला
छल से कर के दुःसाहस
आतंकी नर्तन कर डाला

सपनों की पहली उड़ान थी
धरती का स्वर्ग भुनाना था
देवदारु की चीख सुनी तो
सारा मंजर बेगाना था

शिव को लेकर साथ चले थे
शव लेकर घर को लौटे
राक्षस के अट्टहास की
गाथा का अध्याय समेटे

मांगा हमने न्याय देश से
अपनी चतुरंगिणी सेना से
राफेल उड़ाते चले धुरंधर
दुश्मन की लंका ही फूंकने

चुन चुन कर उनके नौ ठिकाने
अर्द्धरात्रि में ही मथ डाले
ऑपरेशन सिंदूर सफल था
विजयी हो लौटे मतवाले

नगाधिराज हिमालयः

भारत का है मुकुट हिमालय
जहां अवस्थित कैलास शिवालय
रक्षक और प्रहरी सीमा का
सिद्धात्मा सप्त-ऋषि का आलय

गंगा, यमुना ब्रह्मपुत्र का
उद्गम स्थल है यही हिमालय
कृषि, ऊर्जा और पर्यटन का
उद्घोष सुनाता हमें हिमालय

सप्त देशों की सीमाओं तक
फैला नगाधिराज हिमालय
सागरमाथा सर माथे पर
ऊंचाई का सिरमौर हिमालय

वन्य जीवन और वनस्पतियों का
है भारतीय चेतना का वाहक
हिमनद और फूलों की घाटी
अद्भुत सौन्दर्य भरा हिमालय

साहस, निडरता, सूझबूझ का
परचम ही लहराता हिमालय
साधना और सिद्धियों से ही
देवालय कहलाता हिमालय।

सूरज की सतरंगी किरणें
स्वर्ण गुलाबी रंग आभामय
भर देती है विविध रंगों से
देवलोक बन जाता हिमालय

फायकू प्यार के

मैंने कुछ गीत लिखे
सुंदर सृजन, समर्पित
तुम्हारे लिए।

कुछ छंदों में गूंथे
मधुर, मनोहर, मार्मिक
तुम्हारे लिए

गीतों में संगीत भरा
मादक, मधुरिम दिव्य
तुम्हारे लिए

भौंरो की गुंजन से
गुंजरित किया इनको
तुम्हारे लिए

प्यार की भीनी गंध
और मादकता संग
तुम्हारे लिए।

गीतों में ढाला इनको
प्यालों को चूमा
तुम्हारे लिए

रसीले, मदभरे से नयन
कजरारे रंग भरे
तुम्हारे लिए

बसंती मौसम है बुलाया
फाग रचाने को
तुम्हारे लिए।

रंगों में सराबोर दिल
तरसता है आज
तुम्हारे लिए

लिखे हैं आज फायकू
पहली पहली बार
तुम्हारे लिए

विविध

(1)

जाति धर्म सम्प्रदायवाद
और क्षेत्रवाद की प्राचीरें
भ्रष्टाचार की बहती गंगा
औ अंधविश्वास की जंजीरें

देश को अब मुक्त करेंगे
जिन दुर्व्यसनों ने है घेरा
आ जाओ अब धर्मक्षेत्र में
युवा शक्ति आवाहन तेरा।

(2)

वाणी से उनके ओज झरे
व्यक्तित्व मुखर मुस्कान सजे
कविता से राजनीति तलक
सर्वमान्य भाव ही महके
जाति, धर्म, सम्प्रदाय से परे
अटल, राष्ट्रधर्म के चेहरे

(3)

कबीर दास जी आज
आपकी बहुत जरूरत
मंदिर मस्जिद खूब हो रही
फैल रही है नफरत

‘जो घर फूंके आपना
चले हमारे साथ’
ये ललकार लगाओ डांटो
दोनों को फिर लगे हाथ।

(4)
तमाम टेंशन हैं जिंदगी में
कदम कदम पर उलझनें हैं
भूल कर ग़म जिन्दगी के
आज थोड़ा मुस्कुरा लें।

(5)
बीती हुई यादों को
उबाल कर
खौला रहा हूँ
जिंदगी जीने के लिए
अभिनव काढ़ा
बना रहा हूं

(6)
श्वान हूं मैं इंसान नहीं
रखता मैं अभिमान नहीं
अपने पराये का ज्ञान नहीं
बहुरंगों का भान नहीं,
श्वान हूं मैं, इंसान नहीं

डिगता मेरा ईमान नहीं
मुझे जाति-धर्म का ध्यान नहीं
हूं स्वाभिभक्त, बेईमान नहीं
श्वान हूं मैं इंसान नहीं

(7)
तिल का ताड़ बनाकर हमने
कोरोना को पेला है
मास्क, सेनेटाइजर का
सारा स्टाक भी ठेला है
लगता है भारत भर में बस
वायरस का ही मेला है
इतनी भी दहशत ना भेजो
ठेलम ठेल का रेला है